ना
ट
क

कोंकणी 'तियात्र' और नाटक

कोंकणी-रंगमंच के बारे में लिखते हुए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कोंकणी भाषा पूरी कोंकण पट्टी पर बोली जाती है. अतः गोवा प्रदेश में गोवा विश्वविद्यालय में कोंकणी भाषा एम.ए. तथा पी-एच. डी. तक पढ़ाई जाती है. कर्नाटक राज्य और कोची में भी कोंकणी में साहित्य रचा जा रहा है. गोवा में जो कोंकणी रंगमंच है, वह दो समाजों में पसरा हुआ है. क्रिश्चियन समाज अपने रंगमंच के लिए 'तियात्र' शब्द का प्रयोग करते हैं जबकि हिन्दू समाज 'कोंकणी नाटक' शब्द का प्रयोग करते हैं. कर्नाटक तथा कोची में भी उसे 'कोंकणी नाटक' ही कहते हैं.

'तियात्र' शब्द, पुर्तगाली तियात्र (Teatro), लेटिन के शब्द (Theatruna) से आया है. कोंकणी विश्वकोश के आधार पर कहा जा सकता है कि कोंकणी तियात्र ने इटालियन ऑपेरा से प्रेरणा पाकर अपना आकार ग्रहण किया है. कुछ विद्वानों का मानना है कि गोवा में बहुत पहले से ही 'ज़ागर' नाट्य प्रकार चल रहा था, उसीसे तियात्र भी आकार लेने लगा. ज़ागर में नृत्य, गीत, सामाजिक और घरेलू जीवन पर आधारित व्यंग और परिहास, विनोद, मज़ाक जैसे तत्वों पर गीत रचे जाते थे. उसमें संवाद तत्व भी रहते थे. क्रिश्चियन लोग जब यहाँ से चलकर मुंबई में स्थायिक हुए तब अपने साथ 'ज़ागर' पर रचित बहुत कुछ तत्व लेकर गये. धोबी तालाब के पास गेइटी थिएटर- आज का 'एम्पायर थिएटर'-में ज़ागर के प्रयोग होते थे. कहा जाता है कि वहाँ पर पहले पहल सन् १८२० से १८३० की अवधि में ज़ागर का प्रयोग हुआ था. कालान्तर में एक दूसरे के समाजों की टीका के कारण उनमें कलह होने लगी. इसलिए जुवांव आगोस्तीन्यु फर्नांडीस, लुकासिन्यु रिबैर और कायतानीन्यु फर्नांडीस ने अलग प्रकार का कार्यक्रम करने का विचार किया. उस समय मुंबई में इटालियन ऑपेरा कम्पनी के आयोजन लोकप्रिय थे. इतना ही नहीं, पुणे, चैन्नई, शिमलौर कोलकाता में उनकी शाखाएँ भी थीं. उनसे प्रेरणा पाकर, उन्हीं के एक नाटक 'इटालियन भुरगो' को 'इटालियन बच्चा' नाम से रूपान्तरित करके जुवांव आगोस्तीन्यु फर्नांडीस और लुकासिन्यु रिबैर ने मिलकर उसका मंचन किया. सन् १८९२ का वही नाटक कोंकणी का सबसे पहला 'तियात्र' बना. उन्होंने 'गोवा पोर्तुगीज ड्रेमेटिक' नाम से अपनी नाटक कम्पनी भी स्थापित की.

जैसे नाटकों में, नाटक और संगीत नाटक होते हैं, उसी तरह इस खेल में दो तरह के विभाजन होते हैं-तियात्र और खेल तियात्र. गाने रहते हैं. कुछ तियात्रों में कलाकार को कपड़े बदलकर आना ज़रूरी होता था तब प्रेक्षकों को राह देखना पड़ती थी. उस दरमियान लोगों का दिल बहलाने के लिए तथा समय को बिताने के लिए गीत-गायन का रिवाज़ हो गया था. तियात्र में गानों को 'कांतार' कहते हैं. यह शब्द भी पुर्तगाली के केण्टर (Cantar) से बना है, जो अंग्रेजी के 'साँग' का पर्यायवाची ही है. नाटक के (तियात्र के) मूल कथानक से इनका कोई सम्बन्ध नहीं होता था. फिर भी बिना कांतार के तियात्र होते ही नहीं. गाने वाले को 'क्लाउन' (Clown) कहते हैं. गाने के साथ ही संगीत भी होता था. इनमें बजने वाले वाद्य पाश्चात्य होते थे. वायलिन, ट्रम्पेट, क्लेरोनेट, बैन्जो और ड्रम्स. आजकल बैन्जो और वायलिन के स्थान पर गिटार का उपयोग होता है. यह संगीत लिखा हुआ नहीं होता था. तियात्र के अन्त में हमेशा गाना होता ही है और उस गाने में सन्देश भी रहता है.

प्रारम्भिक दिनों में भी स्त्री की भूमिका स्त्री ही करती थी पर कभी-कभी आवश्यकता के अनुपात से स्त्रियां नहीं मिलती थीं तब पुरुषों द्वारा वह भूमिका निभाई जाती थी. आजकल स्त्री और पुरुष दोनों ही अपने-अपने किरदार खुद निभाते हैं. तियात्र के विषय हमेशा पारिवारिक और सामाजिक ही होते हैं. मनुष्यों के सम्बन्ध और उनमें से निपजते प्रश्न कुछ ज़्यादा ही रंगकर प्रस्तुत किए जाते हैं. विषय कोई भी हो, उनमें गर्मागर्म राजकीय और सामाजिक विनोद, व्यंग्य होते ही हैं. हम 'तियात्र' को **'गोवा के लोगों के जीवन का नाट्यमय दर्शन'** कह सकते हैं. सन् १८९२ से लेकर आज तक कोंकणी तियात्र ने कुल ११५ वर्षों की यात्रा तय की है. यथार्थवाद और आदर्शवाद तियात्रा में इस कदर घुल-मिल जाते हैं कि इससे एक नयी भाषा तैयार होकर सामने आती है. मेलोड्रेमेटिक तत्व सब तियात्रों में कुछ ज़्यादा ही परिमाण में पाए जाते हैं. इनमें साहित्यिक दृष्टि बहुत ही न्यून रहती है. इनका मूल हेतु मनोरंजन ही होता है.

जुवांव आगोस्तीन्यु फर्नांडीस के तियात्रों में किसानों का चित्रण बहुत ही सुन्दरता से किया गया है. गोवा प्रदेश के निवासियों को 'कुणबी' जाता है. उनके जीवन पर 'कुणबी ज्याकी' नामक तियात्र रचने वाले जुवांव आगोस्तीन्यु फर्नांडीस एक अच्छे गायक भी थे. सन् १९१० में उनके गानों को एचएमवी कम्पनी ने रिकॉर्ड किया था. उनका 'भावकार' अर्थात् 'ज़मींदार' नाम का तियात्रख दो भागों में, सन् १९०९ में मुंबई में छपा था. इनकी पत्नी रेजीना फर्नांडीस गोवा के रंगमंच के तियात्र की सबसे पहली स्त्री कलाकार थीं. 'कुणबीन' (कुणबी की पत्नी), 'भाटकान्न' (ज़मींदारिन) सुन्दरी की भूमिकाएँ वे बहुत ही सुन्दरता और दक्षता से निभाती थीं.

मडगाँव में रहने वाले एँथोनी मेन्दिश; कलाकार, संगीतकार और गायक तीनों ही रूपों में सफल रहे. उन्होंने कोंकणी फिल्म 'आमचे नसीब' (हमारा भाग्य) में भमिका भी निभाई थी. एँथनी द सा, पिएदाद अगियार, मिस नोर्मा, मिस बंटी, मिस क्लारा, मिस जोजेफिन, साबीना, रेमी कुलासो, प्रेमकुमार, जॅन क्लॉय आदि तियात्रिस्त के नाम लिए जा सकते हैं. **तोमाजिन्य कार्दोज** का नाम सम-सामयिक

तियात्रिस्तों में उल्लेख्य है.

डॉ. आन्द्रे राफाइल फर्नांडीस ने अपने शोध-प्रबन्ध में तियात्र की अवस्था को तीन भागों में विभाजित किया है :

(१) **प्रारंभिक अवस्था :** सन् १८९२ से १९३०.

(२) **स्वर्ण अवस्था :** (अ) सन् १९३०-१९६१ गोवा मुक्ति से पूर्व.
(ब) सन् १९६१-१९७० गोवा मुक्ति के पश्चात् दस वर्ष.

(३) **समसामयिक और नॉन-स्टॉप तियात्र.**

प्रारम्भिक अवस्था के तियात्रिस्तों ने पथ-प्रदर्शन का कार्य किया है. दूसरी अवस्था को -स्वर्ण अवस्था' बताने का कारण यह है कि इस समय में तियात्र की विधा में अनेक परिवर्तन और परिवर्द्धन हुए. गोवा की मुक्ति के पहले और बाद में, राजनीतिक बदलाव ने, सांस्कृतिक बदलाव भी स्वाभाविक रूप से पैदा किए. गोवा मुक्ति के बाद तियात्र विधा में ज़्यादा गतिशीलता आयी. खेल और तियात्र में इस गतिशीलता के कारण खेल, तियात्र विधा 'नॉन स्टॉप तियात्र' में आकार ले सकी. इसी कारण आगे जाकर कोंकणी तियात्रा में और भी परिवर्तन हुए. कला अकादमी, गोवा; कोंकणी अकादमी, गोवा कोंकणी तियात्र और नाटकों के लिए हर साल स्पर्धा का आयोजन करते हैं. पर आज का युवा वर्ग, पता नहीं क्यों ? इस ओर अधिक उत्साह नहीं दिखाता. 'युवा महोत्सव' जैसे आयोजनों में भी आयोजन तक ही उसकी प्रवृत्ति जोर पकड़ती है, बाद में सिर्फ त्यौहारों पर ही नाटक या तियात्र के प्रयोग होते हैं. मानना पड़ेगा कि नये कलाकारों का आकर्षण छोटे पर्दे की ओर अपेक्षया अधिक है. गोवा के रंगमंच पर नाटक और तियात्र दोनों का स्थान अपने-अपने दायरे में ही रहा है. दोनों का समाज, संस्कृति, सामाजिक परिवेश अब तक पृथक-पृथक ही है.

कोंकणी नाटक : कोंकण में दशावतारी खेल औा गोवा में ज़ागर, ललित, गवळणकालो जैसे लोकनाट्य प्रकार और लोककला के नृत्य प्रकार अस्तित्व में हैं. क्रिश्चियन लोग पर्व और उत्सव के समय 'फेळ' खेलते हैं, उसमें कथानक और नाटक दोनों तत्व होते हैं.

मोचेमाडकार मंडली कोंकणी मिश्रित मराठी नाटक करती थी. पर आज के कोंकणी नाटकों की नींव शणै गोंयबाब अर्थात् वामन रघुनाथ वर्दे बालावलीकार ने डाली. फ्रेंच नाटककार मॉलियर के नाटक 'Le Medien Malgre Lui' पर से उन्होंने 'मोगाचे लगन' नाटक सन् 1930 में रचा. इस अनुवाद के बजाय रूपान्तरण कहना अधिक सही होगा. 'झिलबा राणो' नाटक मूल अरबस्तानी 'एक हज़ार आनी एक राती' कहानियों में से एक पर आधारित नाटक है, जिसमें हरून अल् रशीद के स्था पर कदंब राजा का पात्र रचा गया है. आचार्य रामचन्द्र शंकर नायक रचित 'चवथीचो चंद्र' नाटक सन् 1935 में रचा गया. बाद में पुडळीक दांडो रचित नाटक 'ताची करामात' महत्वपूर्ण है. इनका अन्य नाटक 'निमित्ताक कारण' है. उन दिनों मुंबई में अंतरविद्यालयीन कोंकणी स्पर्धा के कारण अच्छे कलाकार, नाटककार, दिग्दर्शक आदि तैयार हुए.

कोंकणी नाटकों में पुडळीक नायक का नाम अत्यन्त महत्वपूर्ण नाटक के तंत्र का मंत्र इस नाटककार के पास है. 'छप्पन थिगळी यशवंत' नाटक में बस स्टेण्ड पर काम करने वाले एक हम्माल की कहानी है. नाटककार ने अपने नाटकों 'सुरींग', 'चौरंग', 'शबै शबै भौजन समाज', 'विचित्राची ज़ात्रा', 'पिंपल पेटला' आदि में लोकनाट्य और लाकगीतों का अच्छा प्रयोग किया है. दिलीप बोरकार, एन. शिवदास, शिवदास बोरकार, अ. ना. म्हांबरो, शांताराम हेदो आदि नाम भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं.

मुंबई में रहने वाले मेंगलूर के निवासी लोगों ने 'सरस्वती नाट्य मंडली' नामक संस्था बनाई. उन्होंने रूपान्तरित और मौलिक दोनों प्रकार के नाटकों का मंचन किया. इनमें मुदूर, कृष्णराय बैंदुर; उमानानाथ दोंगरेकरी मुख्य हैं. उपेन्द्र तिंबलो, दत्ताराम बांबोळकार, रवीन्द्र नमशीकार, विनायक खेडेकार, चन्द्रकान्त पार्सेकार, राजू नायक, रामकृष्ण जुवादकर आदि उल्लेख्य हैं. पुंडळीक नायक लिखित नाटक 'शीरी रे शीरी अधांतरी' के सन् २००० तक पचास से अधिक प्रदर्शन हो चुके हैं. आज के सन्दर्भ में, पूर्णानन्द च्यारी, राजय पवार काफी मेहनत कर रहे हैं. राजय पवार रचित नाटक 'ज़मले रे ज़मले' के पपर्याप्त प्रयोग हुए हैं और वह सी.डी. में भी उपलब्ध है. पुंडळीक नायक ने 'कथा कस्तूरी' सिर्फ दो स्त्री पात्रों को लेकर लिखा है. इसमें स्त्रियों की कथा को इतिहास, समाज, राज्य, खेल विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में बुना गया है. इसमें साज-सजावट, सेटिंग को अधिक महत्व नहीं दिया गया पर स्त्री को उसकी अस्मिता में पहचानने का प्रयास सफलतापूर्वक किया गया है.

सन् १९७० में गोवा-कोंकणी अकादमी की स्थापना हुई. तब तक गोवा में मराठी नाटक ही होते थे. गोवा कला अकादमी ने जब नाट्य स्पर्धा का आयोजन किया तब अन्य २० संस्थाओं के साथ ही, 'सानमाची' (नन्हा मंच) संस्था ने भी हिस्सा लिया. इस स्पर्धा में पुंडळीक नायक रचित नाटक 'खण खण माती' को पहला इनाम मिला. १९७५ में कोंकणी को साहित्य अकादमी की मान्यता मिली. सबसे पहला कोंकणी नाट्य प्रयोग १२ दिसम्बर १९७६ को हुआ, उसके रचनाकार शणै गोंयबाब थे और नाटक था 'झिलबा राणो'.

कोंकणी नाटकों के लिए १९८१ का समय नाट्य आन्दोलन के अन्तर्गत दूसरे टप्पे के रूप में जाना जाता है. इसी समय में, सही मायनों में नाटक **बहुजन समाज** तक पहुँचा. 'शबै शबै भौजन समाज' कोंकणी का सबसे पहला नाटक था जो राजकीय विषय 'Mob Farm' को लेकर पुंडळीक नायक द्वारा रचा गया. 'रंग संगाती' संस्था की तरफ से इसे १९८२ में फिर खेला गया, जिसमें लोकनृत्य और लोकसंगीत के जानकार कलाकारों ने भाग लिया. इसी नाटक को श्रीधर कामत बांबोळकार ने अपने दिग्दर्शन के कलात्मक प्रयोग से समूह नाटक की कल्पना को भी कोंकणी में साकार करके दिखाया. गाँव के स्त्री कलाकारों ने ने इसमें भागीदारी की. परीक्षकों ने उन्हें अभिनय के प्रमाणपत्र भी बाँटे. पुंडळीक नायक के विचार से अजीत केरकार, दिलीप कुमार नायक, विष्णु वाघ, विश्वनाथ नायक जैसे मराठी कलाकारों के महती योगदान के कारण ही, कोंकणी नाटक

तथा रंगमंच के विकास के ग्राफ को बढ़ावा मिला है. नाटककार के रूप में, पुंडलीक नायक के बाद, दत्ताराम कामत बांबोलकर का नाम आता है, जिन्होंने 'शेणिल्लो गाँव', 'संगीत महिरावण', 'रथोत्सव', 'वेदना घर' आदि दस नाटक कोंकणी रंगमंच को दिए. अनूदित नाटकों के प्रयोग सतत् होते रहे हैं. कोंकणी भाषा मण्डल द्वारा पुर्तगाली लेखक **आल्मेद गार्रेत** लिखित एवं **शान्ताराम हेदो** द्वारा रूपान्तरित क्लासिक नाटक 'फ्रेय लुईस द सौज़' को रंगमंच पर लाया गया, जिसे प्रथम पुरस्कार मिला. इसी क्रम में **प्रकाश थली** भी उल्लेखनीय बनते हैं. **बादल सरकार** के दो नाटक 'अजीबपुरांतली कल्पकथा' और 'सगिना महतो' को कोंकणी में लाने का श्रेय इन्हें जाता है. इन्होंने मराठी नाटकों को भी कोंकणी में देने का प्रयास किया है.

दत्ताराम बांबोळकर को लगता है कि कोंकणी रंगमंच के पास कुशल कलाकार, दिग्दर्शक और तंत्र के जानकार हैं. पर, अच्छे नाटककार नहीं हैं क्योंकि उनके अनुभव का क्षितिज बहुत ही सीमित है. आज के कोंकणी नाटकों के पास उनके अनुभव का यह मर्यादित क्षितिज ही उनकी कमज़ोरी है, यह तो मानना पड़ेगा ऐसा मुझे लगता है. अभिनय की दृष्टि से भी आज के विनोदी नाटकों में कितनी सार्थकता है, उसके बारे में भी सोचना पड़ेगा. 'आनी एक बुटो फुललो' के लेखक **प्रकाश वज़रीकार** और बाल नाटककार 'इगड़ी बिगड़ी तिगड़ी था' के लेखक **प्रकाश पर्येकार** जैसे नाटककार भी उभरकर आ रहे हैं. भविष्य में इनसे बहुत कुछ आशा की जा सकती है. मुझे लगता है कि अगर कोंकणी में लिखने वाले प्रादेशिकता के साथ-साथ अपने आपको, अपने लेखन के क्षेत्र में, विश्व के दायरे में अपना क्षितिज विस्तृत कर सकें तो अच्छे साहित्यकार बनकर कोंकणी साहित्य को और विस्तृत कर पाएँगे.

कोंकणी रंगमंच को आने वाले समय में टी.वी., केबल चैनल्स, सी.डी., वीसीडी, डीवीडी आदि के तंत्र को समझकर उनके अनुरूप बदलाव लाना होगा. बहुत कुछ बदला है, बहुत कुछ बदलने वाला है. कोंकणी नाटक व्यावसायिक रूप ग्रहण कर रहा है, यह अच्छी बात है पर, मंजिल अभी बहुत दूर है. जब मुंबई का भांगवाड़ी थिएटर मल्टीप्लैक्स में बदल चुका है तो कोंकणी रंगमंच कितना बच पाएगा ? बहुत सारी नाटकीय विधा और तकनीकी बातें कोंकणी रंगभूमि को सीखनी होंगी. यद्यपि कोंकणी तियात्र, कोंकणी नाटकों की तुलना में पुराना है तथापि बंगाली, मराठी या हिन्दी से बहुत पीछे है. तियात्र करने वाले जब नाटक करेंगे और नाटक करने वाले तियात्र, तभी दोनों समाज वर्णसंकर होकर आशय और आकार के रूप में अपनी मर्यादा को तोड़कर व्यामिश्र रूप में कलाकार, समाज, भाषा, संस्कृति, टैक्नोलॉजी, विषय, साज-सज्जा, पार्श्व गायन, ध्वनि संयोजन, नेपथ्य, संवाद, शैली, कार्य पद्धति आदि में समय और समाज अनुरूप मिश्रण कर पाएँ, तभी कुछ नया खोज पाएँगे...! ●

जन्म : [redacted]०२.१९६६ ○ **डॉ. चन्द्रलेखा द सौज़ा**
शिक्षा : एमए. बीएड. पीएचडी. कोंकणी विभागाध्यक्ष,
कृतियाँ : उपन्यास 'सम-वाद' गोवा विश्वविद्यालय
सहित छह कृतियां प्रकाशित. गोवा ४०३२०६